अजन्ता के चित्रों के माध्यम से विश्व शांति का संदेश

डॉ0 राखी कुमारी
सहायक प्राध्यापिका, छापाकला विभाग
कला एवं शिल्प महाविद्यालय,पटना विश्वविद्यालय,पटना

सारांश

आत्मबोध की लालसा ने ही मनुष्य को संसार त्याग कर निविड़ एकांत की खोज में भेजा। उसने पहाड़ों को अनुकूल पाया और इसके पत्थरों को काटकर इन अट्ट्ल चट्टानों में प्रवेश किया। इसी एकान्त में उसने बुद्ध के दर्शन में लीन होकर उन्हें जैसे जीवित देखा। उसने सत्य से प्यार करना सीखा और यह सत्य उसकी आत्मा पर आ गया। उसने इस समर्पित पूजा की ओर आने के लिए संपूर्ण मानवता से आह्वान किया। अपने विश्वास पर दृढ़ वह साधना करने बैठा और तब मध्य मार्ग की दृष्टि से संपन्न होकर उसने चित्र बनाना शुरू किया और पीछे छोड़ आए संसार का पुनर्सजन किया। अजन्ता के कलाकृतियों में बुद्ध तथागत के जीवन-दर्शन के उक्त दोनों पक्ष गुम्फित है। उनमें एक ओर जहाँ बुद्ध की अन्तर्मुखीन प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं, वहाँ दूसरी ओर बहुजन हिताय की कल्याण-कामना भी व्याप्त है।

शब्द कुंजी: बुद्ध, गुफाओं, बोधिसत्व, कलाकृतियों, मूर्त्तिकला, करुणा

परिचय:

'अजन्ता' शब्द सुनते ही हमारे सामने एक मोहक दृश्य उपस्थित हो जाता है- सौन्दर्य का सपना-सूनी घाटी में छिपी गुफाएँ और एक बहता झरना। ये गुफाएँ चट्टानों के सीने में इसलिए खोदी गई थी कि पवित्र बौद्ध सन्यासी दुनिया की आपाधापी से दूर रहकर वहाँ साधना कर सकें। छेनी चलाने की कुशलता इन गुफाओं के शिल्प को सँवारती है, जहाँ मूर्त्तियाँ उच्च कोटि की है और चित्रों में अनंत आकर्षण है।

अजन्ता भारत और विश्व के प्राचीनतम मठों में से एक है। शिल्प का यह अद्भुत नमूना-बौद्धों का साधना और पूजा स्थल प्रकृति के बीच एकांत में मनुष्य की विजय के प्रतीक के रूप में खड़ा है। इन गुफाओं में बौद्ध भिक्षुओं ने अभूतपूर्व धैर्य- संयम और समर्पण भाव से मानवीय चेष्टाओं द्वारा अपने इष्ट देव यानि बुद्ध की जन्म जन्मान्तर की कथाओं (जातक कथाओं) को चित्रों में अभिव्यक्त करके अपने अभीष्ट को पूरा किया।

बुद्ध की वाणी का उपदेश प्रभावशाली ढंग से देने के लिए भिक्षुओं ने सोंचा कि क्यों न गुफा की दीवारों को भव्य कैन्वास में बदल दिया जाय। इस तरह अजन्ता की दीवारों का चित्र आकार लेने लगे। इस उद्देश्य को पूरा करने के लिए बुद्ध के जीवन की कथाओं (जातक कथाओं) से बेहत्तर कोई विषय नहीं हो सकता था। जिनमें बोधिसत्व के रूप में अपने अद्भुत ज्ञान, चारित्रिक शालीनता, भावना कथा, नि:स्वार्थ सेवा, प्यार, असीमित करूणा के द्वारा भले ही वह मनुष्य देव एक छोटी सी चिड़ियाँ या एक विशाल हाथी के रूप में अवतरित हुए हों किन्तु उन्होंने दूसरों के लिए आदर्श उपस्थित किया था। प्रत्येक जातक कथा में बोधिसत्व द्वारा पारमिता यानि दस गुणों में से एक महत्व दर्शाने का प्रयत्न है। प्रमुख भिक्षु की राय से हर चित्रकार ने एक जातक कथा का चयन किया। उदाहरणार्थ बोधिसत्व की असीम उदारता को चित्रित करने के लिए छंदत दानशीलता के लिए वेस्सांतर तथा विभिन्नता के

लिए विधुर पंडित की जातक कथा का चयन हुआ। इस तरह यह स्पष्ट है कि वृत्तांत का इन चित्रों में विशेष महत्व है न कि बौद्ध धर्म के दार्शनिक पक्ष पर।

अजन्ता के गुफाओं का निर्माण शुंग, कुषाण, गुप्त आदि अनेक राजाओं के समय (200 ई0 पूर्व से 700 ई0 तक) में हुआ। अजन्ता का प्रकृति-वैभव आज भी इतना आकर्षण है कि वहाँ जाने वाला प्रत्येक व्यक्ति इस बात की प्रशंसा किए बिना नहीं रहता कि अजन्ता के उन महान कला-पण्डितों ने अपनी साधना के लिए जिस स्थान को चुना वह सर्वथा उपयुक्त था। भारतीय कला का यह पावन तीर्थ स्थल महाराष्ट्र के औरंगाबाद जिले में स्थित है।

बुद्ध - निर्माण के लगभग सवा सौ वर्ष बाद ''सम्राट अशोक'' (272-232 ई0 पूर्व) हुए। कलिंग युद्ध में मनुष्यों का विनाश देखकर वे बहुत दु:खी और उन्होंने कभी युद्ध ना करने का प्रण लिया। तब इनका मन बौद्ध धर्म की ओर खींचा और वे बौद्ध धर्म के अनुयायी बन गए।

बुद्ध के जीवन-दर्शन के दो आधार रहे हैं। व्यक्ति और समष्टि। उनका व्यष्टिमय जीवन नितान्त एकाकी समाधिस्थ योगी की भाँति अन्तमुखीन रहा है। उनके इस जीवन के परिचायक थेरवाद। बौद्ध धर्म और अशोक की धर्मलिपियाँ है, जिनके अनुसार बुद्ध असाधारण लक्षणों से युक्त होते हुए भी मनुष्य है, देवता नहीं। बुद्ध के जीवन का दूसरा समष्टिमय पक्ष ''बहुजन हिताय'' पर आधारित है। उसमें प्राणिमात्र की कल्याण कामना और प्राणि मात्र की दु:खनिवृत्ति की उच्च भावना समाविष्ट है। इस दूसरी भावना में विश्व सेवा के उच्चादर्श विद्यमान है जिनकी क्रिया रूप में उतारने का कार्य कुषाण और गुप्त राजाओं ने किया। बुद्ध के जीवन-दर्शन के इन दो पक्षों में पहली परम्परा का अनुवर्तन नेपाल, तिब्बत, कोरिया, चीन और जापान आदि देशों में हुआ।

गुफा संख्या एक की भित्तियों पर पद्मपाणि अवलोकितेश्वर के महान चित्र हैं। दोनों हाथ में नीलकमल धारण किये किंचित् त्रिभंगी युक्त भगवान सात्विक विचार में मग्न हैं। मांसल और सुंदर मुखारविंद पर चिंतन, वैराग्य आदि के भाव सफलतापूर्वक प्रकट किए गए हैं। इस चित्र के आस-पास समस्त देव सृष्टि और विचारमग्न यशोधरा पर इनके इन भावों का प्रभाव दर्शनीय है। इस चित्र को देखने से ही ज्ञात होता है कि दर्शक एक ऐसी महान आत्मा के सामने खड़ा है जो विश्वकल्याण की जटिल समस्या के निराकरण में निरत है।

गुफा-1 के दालान में पूरी दीवार पर 12 ग 8 फीट आकार में अविचल तथागत को कामदेव की सेना ने घेर रखा है। यहाँ भय, क्रोध, प्रलोभन, आत्मनिरत अलौकिक शान्ति के भावों को रेखाओं के माध्यम से सजीव किया गया है।

गुफा 2 की बाँयीं दीवार पर हंस जातक की कथा चित्रित है। एक बार बनारस की रानी ने स्वप्न में स्वर्णिम हंस को धर्म का उपदेश देते हुए देखा। रानी ने यह बात राजा को बताई तो उन्होंने स्वर्णिम हंस को फँसाने के लिए सुन्दर झील बनवायी जब स्वर्णिम हंस वहाँ आया तो शिकारी उसे पकड़कर राजा के पास ले आया। वह हंस और कोई नहीं बोधिसत्व थे जब हंस को राजा के सामने उपस्थित किया गया तो हंस रूपी बोधिसत्व ने राजा रानी को क्षमा कर दिया और सत्य, अहिंसा का मार्ग प्रशस्त किया। चित्र में राज हंस बोधिसत्व मानव रूप में सिंहासनारूड़ होकर राजा-रानी तथा दरबारियों को धर्म का उपदेश दे रहे हैं। हंस का बुद्ध के जीवन और भारतीय काव्य में एक महत्वपूर्ण स्थान रहा है।

इस गुफा में दो विभिन्न कालों में चित्रण हुआ मिलता है। पहले वाले काल में साम जातक व छदन्त जातक के चित्र आते हैं। जो दाहिनी भित्ति पर है। छदन्त जातक अजन्ता के कलाकारों का प्रिय विषय रहा है की कथा यहाँ चित्रित है। चित्रकार ने घने जंगल में हाथियों को जल क्रीड़ा में मग्न अंकित किया है। नाना प्रकार के

वृक्ष जिनमें बरगद, गुलर तथा आम चित्रित है। इनमें छदन्त हस्ति अपनी हथिनियों को सूँड़ से कमल पुष्प देते या कहीं पर अपने को अजगर से बचाते चित्रित किया है।

दूसरी ओर जंगल में व्याघ्र प्रवेश करते हैं और छदन्त रूपी बोधिसत्व स्वयं उनके आगे समर्पण कर देते हैं। अन्तिम दृश्य में व्याघ्र को काशीराज के अन्तःपुर में पहुँचते दर्शाया है।

साम जातक - इसी गुफा में साम जातक'' का चित्र है। इसका कथानक श्रवण कुमार वाली कहानी से मिलता-जुलता है। इस चित्र में अंधे माता-पिता की सेवा करने वाले एक काले वर्ण के युवक 'श्याम' को काशीराज के द्वारा तीर से मार देने की कथा आती है, लेकिन यहाँ बुद्ध माता-पिता के विलाप को सुनकर एक देवी ने 'श्याम' को पुनर्जीवित कर दिया है।

इसी गुफा में वेस्सान्तर जातक की कथा यहाँ बड़े मार्मिक रूप में चित्रित है। चित्र में बोधिसत्व राजा भावपूर्ण हस्त-मुद्रा धारण किए आसन पर बैठा है। सामने एक भिक्षुक अपने करूप दाँत निकाले कुछ भिक्षा याचना कर रहा है। उसकी याचना से सारा राज परिवार चकित है। राजा के पीछे बैठी स्त्रियाँ चिंतित है। भिक्षु राजा की दानशीलता का यश सुनकर एक यज्ञ में बलि के लिए उसके राजकुमार पुत्र को भिक्षा में प्राप्त करने आया है। राजकुमार तैयार है। पीछे एक सेवक पात्र में जल लाया है जिससे यह जान पड़ता है कि राजा ने इस महादान का संकल्प कर लिया है। वंस्सान्तर अपनी पत्नी माद्री को राज्य से अपने निष्कासन का दुःखद समाचार सुना रहे हैं।

गुफा संख्या 16 में हस्ति जातक की कथा कथा का चित्र बहुत ही मनोहारी रूप से दर्शाया गया है। कथानुसार अपने किसी पूर्व जन्म में बोधिसत्व ने शक्तिशाली हाथी के रूप में जन्म लिया और वे उस बियावान जंगल में अकेले रहा करते थे। एक दिन जंगल में दर्द भरी आवाज सुनकर हस्ति रूपी बोधिसत्व आवाज की दिशा में चले गये, जहाँ उन्होंने भूखे-पयासे आदमियों को देखा और उन्हें उन पर दया आ गई यात्रियों की भूख मिटाने के लिए वे स्वयं झील के पास वाली पहाड़ी से कूद गए और मृत्यु का वरण किया। इस प्रकार यात्रियों ने इनके मांस और झील के पानी से अपनी भूख एवं प्यास शांत की। लेकिन जब उन्होंने मृत हाथी के विषय में जाना, तो वे उसके त्याग से अभिभूत हो गए। चित्र में भूखे यात्री पहाड़ी पर खड़े सफेद हाथी की तरफ इशारा कर रहे हैं। दृश्य के दूसरे भाग में मृत हाथी को जमीन पर पड़े हुए दर्शाया है। जिस पर दो यात्री तेज चाकू से मांस निकाल रहे हैं। कुछ मनुष्यों को मांस भूनते, कुछ को खाते व कुछ को झील से पानी लाते दर्शाया गया है।

गुफा संख्या सत्रह में मातृपोशक जातक की कथा को बहुत सुन्दर ढंग से चित्रित किया गया है। कथा इस प्रकार है- एक बार बुद्ध देव श्वेत हाथी के रूप में अवतीर्ण हुए थे, उनको पकड़कर काशीराज के पास लाया गया, परन्तु यहाँ उन्होंने अपनी माँ के वियोग में दाना-पानी सब छोड़ दिया। काषीराज को जब ज्ञात हुआ, तब उन्होंने श्वेत हाथी को पुनः जंगल में छोड़ दिया। इस जातक कथा के अंकन में चित्रकार ने माँ से पुनः मिलन की दशा को बड़ी मार्मिक दृष्टि से अंकित किया है। जातक कथा के अन्तिम दृश्य में श्वेत गज अपनी सूँड़ से अंधी माँ को सहलाते हुए दर्शाया गया है।

इस गुफा की खिड़की के ऊपर महाकपि का त्याग की कथा चित्रित है जिसमें बोधिसत्व राजवानर के रूप में जन्म लेते हैं, जो आम के पेड़ पर रहते थे और मस्ती से फल तोड़कर खाते थे। किन्तु जब राजा ब्रह्मदत्त को अच्छा नहीं लगा तो उन्होंने वानरों को पकड़वाने के लिए जाल बिछवाया, किन्तु बोधिसत्व ने अपने साथियों को बचाने हेतु बाँस का एक छोटा सा पुल बनाया किन्तु छोटा होने के कारण बोधिसत्व ने अपना शरीर भी पुल पार करने के लिए तान दिया परन्तु वानर रूप में उनका चचेरा भाई देवदत्त जो उनसे

ईर्ष्या रखता था, बोधिसत्व के हृदय पर कूद गया। ब्रह्मदत्त ने राजवानर बोधिसत्व का त्याग देखा और अभिभूत हो गये। मृत्यु से पूर्व राजवानर बोधिसत्व ने राजा को उपदेश देकर धर्म का मार्ग प्रशस्त किया।

इस गुफा की बायीं दीवार पर द्वादश निदान यानी जीवन चक्र बना है जिसमें 12 तीलियाँ 12 जीवन-मरण के कारणों का प्रतिनिधित्व करते हुए बनायी गयी है। नलगरि का वशीकरण नामक चित्र बुद्ध के उन आठ चमत्कारों में से एक है जिसे बुद्ध ने दर्शाया। बुद्ध का एक चचेरा भाई देवदत्त था। जो ईर्ष्या वश बुद्ध को मारना चाहता था। इसलिए जब एक दिन बुद्ध कहीं जा रहे थे तो उसने एक पागल हाथी नलगिरि को उन्हें मारने के लिए भेजा परन्तु वह पागल हाथी बुद्ध के सामने जाते ही उनके प्रभुत्व के कारण नतमस्तक हो जाता है। चित्र में हाथी बुद्ध के सामने झुका है और बुद्ध उसे थपथपा रहे हैं।

अजन्ता के भित्ति चित्रों में वे भाव दिखाये गए हैं जो प्राणीमात्र के हृदय से नित्यप्रति निकलते रहते हैं अर्थात् सुख-दुख, प्रेम-ईर्ष्या, राग-विराग, आनन्द, उल्लास, करूणा, संयोग-वियोग, दया, माया-ममता, क्रोध घृणा, प्रेम भक्ति इत्यादि वे भाव हैं जिनसे प्राणी हर समय घिरा रहता है तथा जिनमें वह स्वयं को भूला रहता है। इन विभिन्न मानवीय भावों से सारे चित्र सजीव हो उठे हैं।

निष्कर्षः

इस संसार में ''बैर से बैर कभी शान्त नहीं होते, और मैत्री प्रेम से शान्त होते हैं, यही सदा का नियम है। बुद्ध द्वारा दिए उपदेश में से एक उपदेश यह भी है- मध्यम-पटिपदा''इस मार्ग पर चलने से मन की शांति संबोधी और निर्माण मिलता है। इस मध्यम मार्ग के आठ अंग हैं। इन सत्यों का उल्लेख सारनाथ से प्राप्त एक क्षत्र पर खुदा हुआ पाली लेख हैं। अन्त में निष्कर्ष के तौर पर कह सकते हैं कि अजन्ता के चित्रों के माध्यम से विश्व शांति के प्रतीक जागरूकता बुद्ध के समय से ही था परन्तु आज तक हम जागरूक नहीं हो पा रहे हैं। अजन्ता के दीवारों पे बने एक-एक चित्र हमें शान्ति का संदेश देते हैं। बुद्ध के अनुसार शांति भीतर से आती है इसके बिना न तलाशें। अर्थात् मन यदि शान्त है तो क्रोध उत्पन्न नहीं होगा। शान्ति और सद्भाव से जीने के लिए क्रोध जैसी नकारात्मक भावनाओं का त्याग प्यार और करुणा जैसी सकारात्मक भावनाएँ अपने अंदर पैदा करनी होगी। तभी विश्व शांति संभव है। यह पहल हमें स्वयं से करनी होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूचीः

1. अजंता का वैभव संपादन ए0 घोष प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय भारत सरकार-पृ0 सं0-1, 7, 46.
2. भारतीय चित्रकला लेखक वाचस्पति गैरोला संपादक 'श्रीकृष्ण दास' मित्र प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, इलाहाबाद, पृष्ट0 सं0-115, 116.
3. भारतीय कला उद्भव और विकास (वास्तु मूर्त्तिशिल्प चित्र) हरिपाल त्यागी प्रकाशन विभाग सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार पृ0 सं0-89.
4. भारतीय चित्रकला एवं मूर्त्तिकला का इतिहास डॉ0 रीता प्रताप मानव संसाधन विकास मंत्रालय, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर पृ0 सं0-496.
5. आकृति-2 भारतीय कला किरण प्रदीप कृष्ण प्रकाशन मीडिया प्रा0 लि0 पृ0 सं0-35, 38, 39, 45.
6. भारतीय चित्रकला का इतिहास (आदिकाल से पटना कलम शैली तक) ''तारकनाथ बड़ेरिया'' नेशनल पब्लिशिंग हाउस पृ0 सं0-53.